सन्तराम वत्स्य

सरल ज्ञान-विज्ञान माला

# हमारे पशु

सरल ज्ञान-विज्ञान

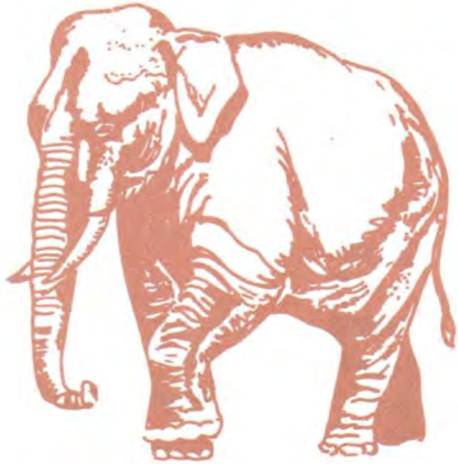

# हमारे पशु

सन्तराम वत्स्य

© प्रकाशक

**प्रकाशक :**
परमेश्वरी प्रकाशन
बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली-110 092

**प्रथम संस्करण :**
1989

आठ रुपये
**मूल्य :**
आठ रुपये

**चित्र सज्जा :**
किशोर ओबराय, नई दिल्ली-110 027

**मुद्रक :**
विमल ऑफसैट
पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032

---

**HAMARE PASHU** *(science feature book for children)*
By Santram Vatsya

Price Rs. 8.00

# पशु

पशुओं की पहचान यह है कि
उनके चार पैर होते हैं।
इसीलिए पशुओं को चौपाया भी कहते हैं।
पशुओं की दूसरी पहचान यह है कि
ये अण्डे नहीं बच्चे जनते हैं
और पशुओं के बच्चे मां के दूध पर पलते हैं।
पशुओं के शरीर पर बाल होते हैं।
ये प्रायः धरती पर रहते हैं।

पशु छोटे-बड़े,
पालतू और जंगली,
घास खाने वाले और
मांस खाने वाले,
आकाश में उड़ने वाले
और पानी में रहने वाले,
बन्दर जैसे डाल-डाल
फाँदने वाले,
कई तरह के होते हैं।

पशुओं के दांतों की बनावट
ऐसी होती है
कि वे अपने भोजन को
अच्छी तरह खा सकें ।
मांस खाने वालों के लम्बे सूए होते हैं
जिससे वे मांस को फाड़ सकें ।

घास खाने वाले पशुओं के
आगे काटने के लिये चौड़े
दांत और पीछे चबाने के
लिए बड़ी दाढ़ें होती हैं ।
बन्दर जो न मांस खाते
हैं और न घास,
उन्हें कन्द-मूल-फल
खाने वाले दांत मिले हैं

जीभ में भी यही बात है।
मांस खाने वाले पशुओं की जीभ
लम्बी और खुरदरी होती है।
खुरदरी जीभ हड्डी से मांस को
छुड़ाने में सहायक होती है।

पशुओं के सूंघने की शक्ति
बड़ी तेज़ होती है।
शिकारी पशुओं को गन्ध से,
आस-पास शिकार के होने
का पता लग जाता है।
इसी तरह शिकारी पशुओं
की गन्ध पाकर, दूसरे पशु
भाग खड़े होते हैं।
जासूस कुत्ते तो गन्ध से ही
चोरों का पता लगा लेते हैं।

पशुओं के पैरों के सिरे भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं।
कइयों की उंगलियों पर नाखून होते हैं।
इसे पंजा भी कहते हैं।
कइयों के गाय-भैंस जैसे खुर होते हैं।
खुर आगे से चिरे हुए होते हैं।
कुछ के घोड़े जैसे सुम होते हैं।
ऊँट, हाथी और गैंडे आदि के पैर
अलग तरह के होते हैं।

मांस खाने वाले पशुओं के नाखून
तीखे और लम्बे होते हैं ।
हिरन आदि पशुओं की टांगें
लम्बी और पतली होती हैं
ताकि वे शिकारी पशुओं के पीछा करने पर
तेज़ दौड़ सकें ।
बन्दर को टहनियां पकड़ने के लिए
पतली और लम्बी उंगलियां मिली हैं ।

जंगली पशुओं के घर तरह-तरह के होते हैं। कुछ तो धरती में गढ़ा खोदकर उसमें रहते हैं। कुछ गुफाओं को अपना निवास बना लेते हैं।

कुछ दूसरों की खोहों में डेरा डालकर बैठ जाते हैं।

बन्दर और वन-मानुष वृक्षों के नीचे ही गुजर कर लेते हैं। जंगली पशु यदि एक ही जगह घर बनाकर रहें तो शिकारी उन्हें खोजकर मार ही डालें। भोजन के लिए भी वे जगह बदलते रहते हैं।

सभी बच्चों की तरह
पशुओं के बच्चे
भी सुन्दर होते हैं,
प्यारे लगते हैं ।

चीता सबसे तेज़ दौड़ने वाला जानवर है।
इसके बाद हिरन और खरगोश का नम्बर है।
घोड़ा और कुत्ता भी तेज़ दौड़ लेते हैं।
जंगली भैंसा, हाथी और गैंडा भी तेज़ दौड़ सकते हैं।

जो पशु झुण्ड बनाकर रहते हैं वे अपना एक सरदार चुन लेते हैं। बन्दरों और हाथियों में यह बात खूब दिखाई देती है।

ये संकट का सामना मिलकर करते हैं।

बच्चों और मादाओं की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं।

सींग पशुश्रों के हथियार हैं ।
सींग प्रायः घास खाने वाले
पशुश्रों के होते हैं ।
सींगों से वे श्रपना बचाव तो
करते ही हैं ;
कभी-कभी हमला भी कर बैठते हैं ।
हिरण के सींग तीखे श्रौर लम्बे
होते हैं ।
बारहसिंगे के सींग वृक्ष की
टहनियों जैसे लगते हैं ।
मेंढे के सींग घुमावदार श्रौर
सुन्दर होते हैं ।

घोड़ा, गधा, श्रौर खच्चर
जिनके सींग नहीं होते हैं,
ज़रूरत पड़ने पर जोर की
लात मारते हैं
श्रौर दांतों से काट भी लेते हैं ।

हाथी का हथियार उसकी सूँड़ है ।

गैंडा अपनी थूथन पर उगे सींग से अपना बचाव करता है ।

कुछ पशुओं के सींग
जो एकबार निकल आते हैं
उमर-भर रहते हैं ।

पर कुछ के साल में एक बार
गिरकर फिर नये निकल आते हैं ।

साही अपना बचाव कांटों से करती है ।

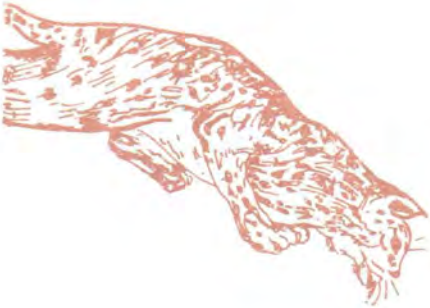

पशुत्रों की सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है।
कई पशुत्रों के कान बहुत लम्बे होते हैं।
वे त्रपने कानों को इधर-उधर घुमा भी सकते हैं।

जो पशु त्रपना भोजन रात को खोजते हैं, उनकी त्रांखों की बनावट ऐसी होती है कि थोड़े से प्रकाश में भी देख सकें।

पशुओं को देखने पर
सबसे पहले हमारा ध्यान रंग पर ही जाता है।
प्रायः पशुओं की पीठ का रंग गाढ़ा
और पेट का हल्का होता है।
इससे उन्हें छिपने में सहायता मिलती है।
कुछ पशुओं का रंग चित्तीदार होता है
जिससे वे धूप-छांह में बैठे
दिखाई नहीं पड़ते हैं।
चीतल हिरन धूप-छांह में बैठा
चीते को दिखाई नहीं पड़ता।
इसी तरह चीता भी चीतल को
दिखाई नहीं पड़ता।

पशुओं को मोटे तौर पर आठ वर्गों में बांटा जा सकता है ।

बनमानुष, बन्दर और लंगूर यह एक वर्ग है । ये वृक्षों पर रहते हैं, अधिकतर फल आदि खाते हैं ।

मांस खाने वाले पशु बहुत हैं ।
इनमें सिंह, बाघ, चीता,
भालू श्रौर रीछ प्रमुख हैं ।
इनमें कुछ ऐसे भी हैं,
जो घास-मांस श्रौर फल सभी कुछ खा लेते हैं ।

तीसरा वर्ग खुर वाले पशुओं का है। इनमें हमारे पालतू पशुओं के अतिरिक्त गैंडा, सूअर, बारहसिंगा और चीतल आदि अनेक जंगली पशु भी हैं।

**चौथे** वर्ग में
तीखे दांतों वाले पशुओं को
गिन सकते हैं ।
सभी तरह के चूहे, गिलहरी,
खरगोश और साही
इनमें प्रमुख हैं ।
इनमें चूहा
हमारा सबसे बड़ा शत्रु है ।
यह अनाज को बहुत
हानि पहुँचाता है ।

कई पशु जुगाली करते हैं ।
वे भोजन को पहले बिना बारीक चबाए
जल्दी-जल्दी निगल जाते हैं ।
चारा चुगकर जब बैठ जाते हैं तो भोजन को
पेट से वापस मुंह में लाकर आराम से चबाते हैं ।
इसे ही जुगाली करना कहते हैं

मनुष्य अपने शौक के लिए
जंगली पशुओं का शिकार करता है ।
पर मांसाहारी पशु दूसरे पशुओं को
भोजन के लिए ही मारते हैं ।
शौक के लिए पशुओं को मारना अच्छी बात नहीं है ।
पशुओं की कई जातियां
शिकारियों के कारण समाप्त हो चली हैं ।
इसीलिए कई जानवरों के शिकार पर
रोक लगा दी गई है ।

हमारे देश की सरकार ने पशुओं की रक्षा के लिए
कई अभयारण्य बनाए हैं ।
अभयारण्य उन जंगलों को कहते हैं,
जिनकी सीमा के भीतर पशुओं को मारना मना है ।
इन जंगलों में पशुओं को देखने के लिए
दूर-दूर से लोग आते हैं ।
यहाँ उन्हें मनुष्यों से किसी तरह का
भय नहीं होता ।

किसी एक ही जंगल में
सभी तरह के पशु नहीं होते ।
कुछ पहाड़ों में होते हैं;
कुछ मैदानों में होते हैं ।
कुछ गर्म जलवायु में होते हैं ।
कुछ ठण्डी जलवायु में होते हैं ।
वैसे जंगल के पशुओं को आसानी से
नहीं देखा जा सकता ।
तुम चाहो तो चिड़ियाघर में छोटे-बड़े सभी
तरह के जंगली पशुओं को देख सकते हो ।
यहाँ वे पशु भी देखे जा सकते हैं
जो हमारे देश में नहीं होते ।

एक वर्ग उन पशुओं का है,
जो धरती पर नहीं, पानी में रहते हैं ।
ह्वेल और सूस ऐसे ही पशु हैं ।
जलचर पशुओं को सांस लेने के लिए बार-बार
पानी के ऊपर आना पड़ता है ।
इनकी पूँछ भी मछलियों की तरह खड़ी न होकर
आड़ी होती है ।
ये जलचर बच्चे जनते हैं
और उन्हें अपना दूध पिलाते हैं ।
ह्वेल संसार का सबसे बड़ा जानवर है ।

एक ग्रौर विचित्र जानवर
हमारे देश में कहीं-कहीं होता है ।
इसे साल, सल्लू-सांप या चोंटीखोर कहते हैं ।
इसके दांत नहीं होते ।
यह चींटियों ग्रौर दीमकों को खाता है ।
उनके बिल को खोदकर, ग्रपनी थूथड़ी को
बिल में डालकर, लम्बी जीभ फैलाता है ।
चींटियां ग्रौर दीमक इसकी चिपचिपी जीभ में
फँस जाते हैं ग्रौर यह उन्हें निगल जाता है ।
इसके शरीर पर खपरैलों की तरह
एक-दूसरे पर चढ़े हुए, शल्क होते हैं ।
यह खतरे के समय गेंद की तरह गोल-मटोल बन
जाता है ।

कीड़े खाने वाले पशुओं का भी एक वर्ग है ।
कांटा चूहा, छछून्दर और कुबंग इसमें आते हैं ।
ये कीड़ों को खाकर हमारा भला ही करते हैं ।

पशुओं में चमगादड़ सबसे निराले हैं ।
ये पक्षियों की तरह आकाश में उड़ते हैं ।
इसलिए लोग इन्हें पक्षी समझ लेते हैं ।
पर ये पक्षी नहीं पशु हैं ।
ये रात को उड़ते हैं ।
दिन में इन्हें दिखाई नहीं देता ।

मनुष्य ने बहुत से पशुओं को
पालतू बना लिया है ।
वह इनसे तरह-तरह के काम लेता है।
गाएं-भैंसें दूध देती हैं ।
हाथी, घोड़ा-गधा-खच्चर और ऊँट
सवारी और सामान ढोते हैं ।
बैल और भैंसे खेती का काम करते हैं ।
भेड़-बकरियों का मांस और ऊन
काम आते हैं ।
पशुओं के चमड़े से जूते और
तरह-तरह की चीजें बनाई जाती हैं ।
पशुओं के गोबर से
बढ़िया खाद बनती है ।
ये पशु जीते जी तो
हमारे काम आते ही हैं,
मर कर भी हमारे काम आते हैं ।

हमें पालतू पशुओं के खाने-पानी का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये । जब कभी वे बीमार हो जाएं, पशु चिकित्सालय में उनका इलाज कराना चाहिये । उनके रहने की जगह साफ-सुथरी रहनी चाहिये । उनके बच्चों के हिस्से का दूध नहीं दुहना चाहिये । लादू पशुओं पर बहुत ज्यादा बोझ नहीं लादना चाहिये ।

पशु हमारी तरह बोल नहीं सकते,
वे अपना दुःख-कष्ट हमें बता नहीं सकते।
इसलिए हमें अपने आप
उनका ध्यान रखना चाहिये।
उनसे उतना ही काम लेना चाहिये,
जितना वे ठीक से कर सकते हैं।
पशु बीमार होने पर खाना-पीना बंद कर देते हैं;
जिससे उनके बीमार होने का पता चल जाता है।
पशुओं को छूत की बीमारियों से बचाना चाहिये।
पशुओं के साथ दया का बर्ताव करना चाहिये।

पशु हमारे मित्र हैं।
वे हमारी अनेक
आवश्यकताएं
पूरी करते हैं।